International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 2; March 2017; Page No. 169-170

समाज विज्ञान एवं हमारी सोच

Jasvinder Singh

Research Scholar, Barkatulla University, Bhopal, Madhya Pradesh, India

प्रस्तावना

समाज एवं विज्ञान के बीच निरन्तर जारी संघर्ष के जिस मुकाम पर आज हम खड़े हैं यहाँ विज्ञान और टैक्नालाजी के एक से बढ़कर एक हैरतअंगेज कारनामे हमारे चारो ओर दिखाई दे रहे हैं। टैक्नालाजी कम्पयूटर, सेटेलाइट और इन्टरनेट के संयोग ने देश काल का फासला काफी कम कर दिया है। नये–नये अविष्कारों के चलते भोजन, वस्त्र, आवास ही नहीं बल्कि स्वास्थ्य, शिक्षा, यातायात और मनोरंजन जैसी रोजमर्रे की जरूरतों का स्तर दिनों–दिन बेहतर होता जा रहा है। हालाँकि यहाँ भी हमारा सामना एक विरोधाभासपूर्ण स्थिति से होता है। विज्ञान और तकनालाजी की अभूतपूर्व सफलता के बावजूद समाज के करोड़ो लोग भूखे–नंगे, बेघर, बीमार और कुपोषित हैं। जिन बिमारियों का इलाज बहुत आसान और सस्ता है उनकी चपेट में आकर हर साल करोड़ो लोग मर जाते है। बाढ़ सूखा, भूकम्प लू और ठण्ड से मौत की खबरें आती रहती है। जाहिर है कि विज्ञान और टैक्नालाजी की उपलब्धियाँ मुठ्ठीभर मुनाफाखोरों की गिरफ्त में हैं और केवल ऊपरी तबके के चंद लोगों तक हो सकती है। इन उपलब्धियों को सर्वसुलभ बनाने के बजाय बहुसंख्यक लोगों को भाग्य भरोसे छोड़ दिया जाता है।

हमारे समाज के करोड़ो लोगों तक ज्ञान–विज्ञान की रोशनी अब तक नहीं पहुँच पायी है। ऐसे में समाज के अधिकांश लोगों में वैज्ञानिक नजरिये का अभाव कोई आश्चर्य की बात नहीं, लेकिन जिन लोगों को ज्ञान–विज्ञान की जानकारी और उसकी उपलब्धियाँ हासिल है, वे भी वैज्ञानिक नजरिया अपनाते हो, तर्कशील और विवेकी हो यह जरूरी नहीं। इसका सबसे ज्वलन्त उदाहरण 1995 में देखने को मिला जब गणेश की मूर्ति के दूध पीने की अफवाह फैली थी। उस दिन मंदिरों के बाहर दूध लेकर कतार में खड़े या रेलमपेल मचा रहे लोगों में ज्यादातर शिक्षित लोग ही थे। दरअसल गाँव–कस्बों तक यह अफवाह पहुँच नहीं पायी थी, क्योंकि इसे मोबाइल फोन और टेलीविजन के माध्यम से फैलाया गया था जिनकी पहुँच उस दौरान शहरों तक ही सीमित थी। उस भीड़ में कई वैज्ञानिक, विज्ञान शिक्षक, डॉक्टर, इंजीनियर और अन्य पढ़े–लिखे लोग भी शामिल थे। अगर कुछ तर्कशील लोगों ने इस भेड़ियाधिसान का विरोध किया भी तो उन्हें नास्तिक और विधर्मी बताते हुए अलगाव में डाल दिया गया था।

विज्ञान और वैज्ञानिक नजरिया के बीच गहरा सम्बन्ध होता है, लेकिन हमारे देश और समाज में एक अजीब विरोधाभास दिखाई दे रहा है। एक तरफ विज्ञान और टैक्नालाजी की उपलब्धियों का तेजी से प्रसार हो रहा है तो दूसरी तरफ के जनमानस में वैज्ञानिक नजरिये के बजाय अंधविश्वास, कट्टरपंथ, पोगापंथ, रूढ़ियों और परम्पराएँ तेजी से पाँव पसार रही है। वैश्वीकरण के प्रबल समर्थक और उससे सबसे अधिक फायदा उठाने वाले तबके ही भारतीय संस्कृति की रक्षा के नाम पर अतीत के प्रतिगामी एकांगी और पिछड़ी मूल्य मान्यताओं को महिमामंडित कर रहे हैं। वैज्ञानिक नजरिया तर्कशीलता, प्रगतिशीलता और धर्मनिरपेक्षता की जग अंधश्रद्धा, संकीर्णता, और असहिष्णुता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

विज्ञान की जीत के मौजूदा दौर में यदि वैज्ञानिक नजरिया लोगों की जिन्दगी का चालक नहीं बन गया तो इसके पीछे कई कारण है। समाज में व्याप्त अंधविश्वास के पीछे अज्ञान के अलावा, अज्ञात का भय, अनिश्चित भविष्य समस्या का सही समाधान होते हुए भी लोगों की पहुँच से बाहर होना, समाज से कष्ट जाने का भय, परम्पराओं से चिपके रहने की प्रवृत्ति, धर्मभीरूता और ईश्वर की प्रति अंधश्रद्धा, धर्मगुरूओं, महापुरूषों या मठाधीशों के प्रति अंधविश्वास जैसे कई कारण होते हैं विज्ञान का अध्ययन–अध्यापन करने वाला कोई भौतिकशास्त्र का शिक्षक यह जानता है कि पदार्थ को उत्पन्न या नष्ट नहीं किया जा सकता। लेकिन निजी जिन्दगी में वही किसी बाबा द्वारा चमत्कार से भभूत पैदा करने या हवा से फल या अंगूठी निकालने में यकीन करता है। यह उस शिक्षक का अज्ञान नहीं बल्कि वैज्ञानिक नजरिये का अभाव है। उसके लिये विज्ञान की जानकारी केवल रोजी–रोटी कमाने का जरिया है। जीवन में उसे उतारना या कथनी करनी के भेद को मिटाना उसकी मजबूरी नहीं। ऐसे अर्थज्ञानी अक्सर कुतर्क के जरिये अंधविश्वास को सही ठहराने में विज्ञान का इस्तेमाल करने से भी बाज नहीं आते।

हमारे देश की स्थिति तो और भी विचित्र है, जहाँ का शासक वर्ग जनतांत्रिक क्रान्तियों की पैदाईश नहीं है। उपनिवेशवादी दौर में अंग्रेजों की छत्रछाया मे उत्पन्न वर्ग ने समझौते और दबाव की रणनीति अपनाकर खुद को आगे बढ़ाया और सत्ता हस्तान्तरण के जरिये शासन की बागडोर सम्भाली। राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद भी इसने सामान्तवाद से समझौता किया। अपनी वर्गीय सीमाओं के चलते अर्थव्यवस्था सहित जीवन के हर क्षेत्र में उपनिवेशवाद विरोधी, सामान्तवाद विरोधी जनवादी कार्यभारों को क्रान्तिकारी तरीके से पूरा नहीं किया। आधे–अधूरे सुधारों के जरिये एक विकलांग–विकृत पूँजीवादी समाज अस्तित्व में आया। ऐसे समाज में स्वस्थ्य पूँजीवादी मूल्यों और वैज्ञानिक नजरिये का अभाव कोई आश्चर्य की बात नहीं। संविधान में दर्ज धर्मनिरपेक्षता की व्याख्या यहाँ सर्वधर्म सम्भाव के रूप में की जाती है। धार्मिक भावनाओं पर चोट पहुँचने की आड़ में प्रगतिशील विचारों और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अक्सर गला घोंटा जाता है। शासन–प्रशासन के स्तर पर हिन्दू कर्मकाण्डों का प्रयोग यहाँ आम बात है। नेताओं–अधिकारियों द्वारा सरकारी कार्यक्रमों में नारियल फोड़ना, हवन–पूजन, अनुष्ठान या भजन–कीर्तन सर्वस्वीकृत है। सरकारी पार्कों और सार्वजनिक जमीन पर पूजा स्थल यहाँ तक कि सरकारी कार्यालयों और थानों में मंदिर होना कानून सम्मत है। सरकार के शीर्ष अधिकारियों, नेताओं द्वारा सार्वजनिक रूप से अंधश्रद्धा को बढ़ावा देने वाले समाचार पत्रों में तांत्रिकों द्वारा बच्चों की बली देने या महिलाओं का यौन शोषण करने, डायन होने का प्रकोप लगाकर महिलाओं की हत्या करने तथा झाड़ फूँक, जादू–टोना और गंडा–ताबीज के द्वारा लोगों को ठगने की खबरें

अक्सर आती रहती है। अखबारों में बंगली बाबा तांत्रिक चमत्कारी पुरूष ज्योतिषाचार्य के विज्ञापन छपते है। जप–तप, हवन अंधविश्वास और फलित ज्योतिष को विज्ञान सिद्ध किया जाता है और अब महाविद्यालयों में ऐसे विज्ञान का पठन–पाठन हैं। भी होने लगा है। टीवी चैनलों के मार्फत मनोकामना पूर्ण करने वाले बड़े–बड़े दावों के साथ यंत्र–तंत्र और अंगूठी बेचे जाते है। अंधविश्वास पुनर्जन्म और भूत–प्रेत के किस्से प्रसारित किया जाते है।

विज्ञान के सच को फैलाने के लिए हर सम्भव माध्यम का उपयोग किया जाना चाहिए। इलेक्ट्रिानिक माध्यमों से जिस तरह अंधविश्वासों को फैलाया जा रहा है। इस पर सरकार को पाबंदी लगानी चाहिए। यह देखना चाहिए कि इससे समाज में अविज्ञान फैल रहा है। अंधविश्वास फैल रहा है। जब विज्ञान का सच मालूम होता है। तो लोगों में जागरूकता आती हैं इसका एक उदाहरण है 1980 में जब पूर्ण सूर्य ग्रहण लगा तो भारत में जहाँ पूरा वैज्ञानिक माहौल था लोग घरों में बंद रहे। सड़के खाली थी। बाहर कोई दिखाई नहीं देता था। ग्रहण का इतना भय था। लेकिन 1995 में पूर्ण सूर्य ग्रहण लगा तो देश में काफी लोगों ने उसे सुरक्षित तरीके से देखा। तब इतनी जागरूकता आ चुकी थी कि सूर्य ग्रहण एक प्राकृतिक घटना है और इससे कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। पिछला सूर्य ग्रहण 22 जुलाई 2011 को लगा। इसमें लाखों लोगों ने सूर्यग्रहण को देखा। ये लाखों ने सूर्यग्रहण को देखा। ये लाखों लोग इसलिए सूर्यग्रहण को देखने के लिए तैयार हुए क्योंकि उन्हें ग्रहण का सच मालूम हो गया था। अतः आवश्यक है कि विज्ञान के सच को समाज के जन–जन तक पहुँचाना चाहिए।

वर्तमान समाज प्राचीन समाज के बिल्कुल विपरीत है। इस समाज के परिवर्तन में प्रौद्योगिकी का बहुत बड़ा हाथ है। समाज में होने वाले तीव्र परिवर्तन प्रौद्योगिकी का ही परिणाम हैं। विज्ञान व प्रौद्योगिकी द्वारा समाज में ऐसे उपकरणों का अविष्कार हुआ हे, जिसने लोगों के ज्ञान वृद्धि में अकल्पनीय परिवर्तन किया है। विज्ञान प्रौद्योगिकी द्वारा समाज में सामाजिक व आर्थिक दूरी कम हुई है तथा इसने क्षैत्रिय दूरी को भी कम किया है। प्रदेश, देश तथा विदेश के वे स्थान जहाँ पहुँच पाना लगभग असम्भव था, विज्ञान ने वे दूरियाँ भी समाप्त कर दी हैं। विज्ञान व प्रौद्योगिकी द्वारा समाज के व्यक्तियों में निकटता बढ़ी है। जहाँ प्राचीन समय में व्यक्ति को एक दूसरे की कुशलक्षेम जानने व पता करने में महीनों लग जाते थे वही आज चन्द सेकंड में व्यक्ति की स्थिति का पता लगाया जा सकता है।

समाज का ऐसा वर्ग जो शिक्षा से कोसों दूर था, उसके लिए शिक्षा के नए द्वार खुल गए है। वर्तमान में शिक्षा केवल किताबी ज्ञान न रहकर सर्व क्षेत्रों में ज्ञान के विस्तार में प्रगतिशील हुई है। आज शिक्षा विद्यालय के कमरों में कैद नहीं है, बल्कि व्यक्ति जहाँ जैसे चाहे वैसे ज्ञान प्राप्त कर सकता है। विज्ञान के विस्तार द्वारा ज्ञान में भाषा की दीवार भी समाप्त हो गई है। अर्थात् किसी भी भाषा में ज्ञान प्राप्त करना आसान हो गया है।

विज्ञान व प्रौद्योगिकी ने समाज के सांस्कृतिक विस्तार को भी प्रोत्साहित किया है। तथा उसे उन्नति की ओर अग्रसर किया है। जहाँ एक ओर व्यक्ति केवल अपनी संस्कृति तक ही सीमित था, वही आज व्यक्ति घर बैठे विश्व की सभी संस्कृतियों से परिचित है, जो समाज में परिवर्तन का बेहतर उदाहरण है। जिसकी वास्तविकता केवल विज्ञान द्वारा ही सम्भव हो पाई है।

विज्ञान के साथ समाज का संबंध इस प्रकार समझा जा सकता है कि जिस प्रकार विज्ञान में नियम विश्वसनीय तथा स्थायी होते हैं उसकी प्रकार समाज के नियमों में भी विश्वनीयता व स्थिरता होती है। किंतु कई बार समाज के कुछ ऐसे पक्ष होते हैं जो स्थायी न होकर परिवर्तनशील होते हैं। इसमें कई परिणाम चौंकाने वाले व अकल्पनीय हो सकते हैं। समाज की प्रगति को जानना व उसका अध्ययन करना एक विज्ञान है। समाज एक ऐसी इकाई है जिसमें प्रतिपल परिवर्तन होते हैं व व्यवस्थाएँ बदलती रहती हैं, जिनके स्थान पर नई व्यवस्थाएँ स्थान के लेती है। समाज का वैज्ञानिक अध्ययन व्यक्ति के बौद्धिक व नैतिक मूल्यों के अध्ययन पर आधारित होता है। मानव विज्ञान द्वारा हमें मानवीय प्रकृति का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है। समाज के विषय में अमूर्त है, क्योंकि समाज की आधारशीला कुछ नियमों से बनी होती है और ये नियम अमूर्त होते हैं इसलिए विज्ञान अपनी अन्य शाखाओं के साथ समाज से जुड़कर विभिन्न पहलुओं के आंकड़े एकत्रित करता है। इसके द्वारा समाज की घटनाओं व तथ्यों का निष्पक्ष अध्ययन किया जाता है। समाज के वैज्ञानिक अध्ययन में भावनाओं का कोई स्थान हीं होता। जिस प्रकार विज्ञान के परीक्षणें द्वारा भविष्यवाणी संभव है। यदि समाज में घटित भूतकालीन व वर्तमान घटनाओं का सूक्ष्म अध्ययन किया जाए तो भविष्यवाणी करना सुविधाजनक होगा।

संक्षेप यह कहा जा सकता है कि समाज व विज्ञान दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। समाज के बिना विज्ञान के परीक्षण संभव नहीं है व विज्ञान के बिना समाज निशक्त है। विज्ञान समाज के प्रगति में सहायक है तथा समाज द्वारा ही विज्ञान के तथ्यों को सही साबित किया जा सकता है। संकल्पनाएँ चाहे किसी भी शाखा से संबंधित हो जब तक उनकी वैज्ञानिक विवेचना नहीं की जाती उनमें बोधगम्यता नहीं आती। विज्ञान समाज के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन करते हुए समाज को उत्कृष्टता के स्तर पर पहुँचाने में सहभागी है। अतः समाज के विभिन्न पहलुओं के विकास में विज्ञान की अवहेलना असंभव है। विज्ञान की खोज, लक्ष्य व प्रयोग अंततोगत्वा समाज और उसकी उन्नति से जुड़े हैं। किसी भी सम्य समाज की कल्पना विज्ञान की उन्नति व उपस्थिति के बिना अकल्पनीय है। अतः विज्ञान और समाज का अंतः संबंध आदिकाल से था व अनंत तक बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. समाज के मौलिक अधिकार 2014
2. भारत में सामाजिक परिवर्तन, डॉ० ओमप्रकाश जोशी 2011
3. विनीत कुमार, मंडी में मीडिया वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2012